मासिक

इसलाहे समाज

दिसंबर **2018** वर्ष **29** अंक **12**

रबीउ़स्सानी **1440** हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़्क़

❑	वार्षिक राशि	**100** रुपये
❑	प्रति कापी	**10** रुपये
❑	टोटल पेज	**28**

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट **2035** क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	प्रेस रिलीज	**2**
2.	नियम के पालन का फल	**4**
3.	क्या अनदेखी चीज़ों पर विश्वास करना संभव है?	**5**
4.	पानी का महत्व	**8**
5.	अम्न व शान्ति	**10**
6.	बच्चों को समझाने का सहीह तरीक़ा	**11**
7.	ज्ञान, कर्म, आमंत्रण और सब्र	**13**
8.	आओ और इसी दुनिया में भला पाओ	**14**
9.	मानवता की सुरक्षा.....	**15**
10.	शान्ति की बुनियाद	**17**
11.	क़त्ल महा पाप है	**18**
12.	इस्लाम में आस्था का महत्व	**20**
13.	प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें	**22**
14.	मेरठ में समाज सुधारक प्रोग्राम	**23**
15.	मधुमेह का एलाज	**24**
16.	ग़रीब कौन है?	**25**
17.	दहेज़ समाज में एक नासूर	**26**
18.	नेमत का सहीह प्रयोग	**27**

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

नियम के पालन का फल

❑ **नौशाद अहमद**

इन्सान के जीवन में नियम के पालन की बड़ी अहमियत है, नियम इन्सान को एक सहीह डगर पर ले जाता है, दुनिया का कानून भी इन्सान को नियम की डोर से बंधने के लिये प्रेरित करता है। इस संसार का संचालन एक नियम के तहत हो रहा है। कहा जाता है कि अगर किसी बड़े से बड़े अकलमन्द के जीवन में नियम की पाबन्दी के पालन का अभाव हो तो वह भी अपने सांसारिक जीवन में नाकाम हो जाता है।

धर्म इन्सान को नियम का पाबन्द बनाने की सीख देता है। इसी लिये इस्लाम धर्म में यह आदेश दिया गया है कि बन्दा अपने पालनहार के बनाये गये नियमों का पालन करे ताकि दुनिया के हर इन्सान के जीवन में अनुशासन पैदा हो।

एक नियम वह है जिस को अल्लाह ने बनाया है और वह अपने बन्दों को इस नियम और सिद्धांत पर चलने पर सफलता की गारन्टी देता है और उस सिद्धांत पर चलने का आदेश देता है जो उसे दुनिया एवं आखिरत (मरने के बाद के जीवन) में सफल बना दे। सफलता का पैमाना और कसौटी यह है कि इन्सान अपने पालनहार अल्लाह के बताये गये सिद्धांतों की पैरवी करे अपने जीवन को सुखमय और सफल बनाने के लिये उसके बताये गये तरीकों का अनुसरण करे। सत्य क्या है असत्य क्या है दोनों के बीच में अन्तर करे।

सत्य का रास्ता इन्सान को कामयाबी की तरफ ले जाता है, समाज में शान्ति स्थापित करता है, इन्सान के सुखी हो जाने का रास्ता प्रशस्त करता है, और जो सत्य की राह पर चलता है वह दूसरे के लिये शान्ति का प्रतीक बन जाता है। यह सुखमय जीवन उस वक्त प्राप्त हो गा जब इन्सान अल्लाह के बताये गये उसूलों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करेगा। बुरी इच्छाओं को छोड़ कर सत्कर्मों का रास्ता अपनायेगा, यह अल्लाह का दिया हुआ नियम है जो इन्सान को हर हाल में सफलता की ओर ले जाता है।

एक नियम वह है जिसको कुछ स्वार्थी लोग केवल अपने हितों के लिये बनाते हैं यह वक्ती तौर पर कुछ लोगों के लिये हितकारी तो हो सकता है लेकिन इसमें पूरी मानवता का हित कदापि नहीं हो सकता, इस लिये हम तमाम इन्सानों को वह नियम अपनाना चाहिये जो हमें अपने पालनहार का प्रिय बना दे, समाज के हर वर्ग के जीवन को सुखमय बना दे, स्वार्थी नियम किसी भी व्यक्ति और समाज के लिये लाभकारी नहीं है अतः आवश्यक है कि दुनिया का हर इन्सान एक ऐसे नियम और सिद्धांतों का पालन करे जो उसे दुनिया और आखिरत में सफल बना दे और ऐसी राह से बचने का प्रयास करता रहे जो उसे दुनिया और आखिरत दोनों में नाकाम करता है। अल्लाह से दुआ है कि वह तमाम इन्सानों को ऐसे रास्ते पर चलने की क्षमता प्रदान करे जो सभी के लिये सुखमय हो और सफलता का जामिन हो और पूरे समाज के लिये हितकारी साबित हो।

क्या अनदेखी चीज़ों पर विश्वास करना संभव है?

❑**मुहम्मद अताउर्रहमान मदनी**

अनदेखी चीज़ों पर विश्वास करने को ''ईमान बिल ग़ैब'' भी कहा जाता है। अल्लाह को न मानने वालों ने अल्लाह पर ईमान न लाने के बारे में एक ख्याली दुश्वारी यह घढ़ रखी है कि इस साइंटिफिक और विकसित जमाने में जबकि कोई भी चीज़ साइंटिफिक तरीके से देख भाल कर और ज्ञानात्मक तौर पर छान फटक कर मानी जाती है, किस तरह हम किसी ऐसी जात पर यकीन (विश्वास) कर लें जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा?

स्पष्ट रूप से यह एक चौंका देने वाला सवाल है लेकिन गहरी नजर से देखा जाये तो यह बिलकुल खोखला सवाल मालूम होगा जिसमें कोई वज़न नहीं।

विज्ञान (साइंस) का नाम लेकर ऐसा सवाल करना केवल यहीं नहीं कि साइंस की तौहीन (अपमान) है बल्कि साथ ही साथ इस बात की प्रेरणा है कि साइंस की शोधीय हैसियत लपेट कर रख दी जाये और अब तक साइंस ने ''ईमान बिल गैब'' के माध्यम से अथवा दूसरे शब्दों में अनदेखी चीज़ों पर विश्वास करके जो अविष्कार और तरक्कियां की हैं वह सबके सब खत्म करके पूरी दुनिया वालों को फिर से अज्ञानता वाला जीवन गुजारने पर मजबूर कर दिया जाये।

साइंस में और अनदेखी चीज़ों पर विश्वास करने में कोई टकराव नहीं, दूसरे शब्दों में साइंस में और ईमान बिल गैब में या ''अल्लाह के वजूद को स्वीकार'' करने में कोई विरोधाभास नहीं है बल्कि ''ईमान बिल गैब'' तो साइंसी रिसर्च की पहली ईंट है और कोई भी वैज्ञानिक ईमान बिल गैब'' या ''अनदेखी चीज़ों पर विश्वास'' किये बिना एक भी कदम लागे नहीं बढ़ सकता।

किसी व्यक्ति को चाहे वह वैज्ञानिक हो या साधारण आदमी, स्वयं अपने वजूद में कोई सन्देह नहीं होता। जब वह अपने आप को या अपने किसी दोस्त को जिससे वह हाथ मिला रहा हो, चलता फिरता और इस दुनिया की फ़िज़ा में सांस लेता हुआ देखता है तो यकीन कर लेता है कि वह जीवित है, उसके अन्दर प्राण या आत्मा मौजूद है लेकिन जब उसकी सांस बन्द हो जाती है, दिल की गति रूक जाती है और उसके बाद केवल एक शारीरिक ढांचा पड़ा रहता है तो वह यकीन कर लेता है कि अब उसमें प्राण मौजूद नहीं, उसकी आत्मा निकल गयी है।

अगर आप किसी वैज्ञानिक या उसके बड़े से बड़े अध्यापक से पूछें कि क्या उसने अपनी या किसी दोस्त की जान या रूह (आत्मा) को कभी अपनी आंखों से देखा है जब कि उसकी जान या रूह हमेशा और हर क्षण उसके शरीर के साथ रहती है? एक दो नहीं, बल्कि दुनिया के सभी वैज्ञानिकों का एकमत जवाब यही होगा और है कि अपने शरीर में रूह के वजूद का यकीन रखने के बावजूद हमने आज तक रूह को नहीं देखा है।

अब आप अपने अन्तरात्मा से पूछिये कि रूह को देखे बगैर अपने शरीर में उसके वजूद का यक़ीन कर लेना ''ईमान बिल ग़ैब''

या ''अनदेखी चीज़ों पर यकीन करने'' जैसी बात है या नहीं? अगर बात ऐसी ही है और यकीनन है तो जिस तरह किसी शरीर में रूह को देखे बगैर केवल उसके लक्ष्ण और गतिविधियों (हरकात व सकनात) को देख कर उसमें रूह के वजूद का यकीन करना कोई कठिन मामला नहीं है बल्कि यह एक स्पष्ट बात है, ठीक इसी तरह सांसारिक लक्षण देख कर अल्लाह की जाति के वजूद का बगैर देखे यकीन करना भी कोई मुश्किल मामला नहीं बल्कि यह भी एक स्पष्ट और आम फहम (आसान, सरल) बात है।

किसी साइंसी रिसर्च के लिये वैज्ञानिक का वजूद पहली शर्त है और किसी इन्सान का वजूद ''ईमान बिल गैब'' वाली चीज़ अर्थात जान या रूह के बगैर संभव ही नहीं, अतः साइंसी रिसर्च की पहली शर्त में अर्थात वैज्ञानिक के वजूद में ''ईमान बिल गैब'' वाली चीज़ एक अनिवार्य भाग या पहली ईंट है और इसी आधार पर यह कहना बिल्कुल दुरूस्त है कि कोई भी साइंसदां ''ईमान बिल गैब'' या ''अनदेखी चीज़ों'' पर यकीन किये बगैर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता और इसी दृष्टिकोण से यह कहना भी दुरूस्त है कि साइंस और ''ईमान बिल गैब'' में कोई टकराव नहीं, बल्कि सहीह साइंस और सहीह मज़हब एक दूसरे का सहायक है और बुनियादी तौर पर दोनों एक ही किस्म का तकाज़ा करते हैं अर्थात साइंस और मज़हब दोनों के लिये ''ईमान बिल गैब'' अनिवार्य है।

मज़हब और साइंस के लिये ''ईमान बिल गैब'' जरूरी और पहली ईंट कहने का मतलब यह कदापि न समझा जाये कि इस सिलसिले में हर चीज़ को आंख बन्द करके मान लिया जाये बल्कि यहां केवल यह साबित करना मकसद है कि साइंस में जिस तरह कुछ चीज़ों पर यकीन करने के लिये देखना और निरीक्षण करना ज़रूरी है और बाज़ चीज़ों पर बगैर देखे भी यकीन करना ज़रूरी होता है, ठीक इसी तरह कुछ बातें ऐसी पायी जाती हैं जिन में आंख से देखे या निरीक्षण किये बगैर कोई हुक्म नहीं लगाया जा सकता अतः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सहीह मज़हब और सहीह साइंस में कोई टकराव नहीं।

अगर कोई चीज़ नजर न आये तो उसके लक्ष्ण देख कर उसके वजूद का यकीन करना मौजूदा विकसित साइंस के दौर में एक आम बात है और इसकी सैकड़ों मिसालें पेश की जा सकती हैं लेकिन इस प्रकरण को थोड़ा स्पष्ट करने के लिये यहां केवल एक मिसाल पेश की जाती है।

आप बिजली के बारे में जानते हैं आप इसे रात दिन घरेलू या बाहरी जिन्दगी में सामूहिक एवं व्यक्तगत, निर्माणिक, औद्योगिक और खेती बाड़ी वगैरह कामों के लिये प्रयोग करते हैं लेकिन अब तक न आपने और न आप से पहले के लोगों में से किसी शख्स ने और न स्वयं बिजली के अविष्कार करने वाले ने अपनी आखों से इस बिजली को देखा और न कोई भविष्य में देख सकेगा लेकिन बलब या कुमकुमे के जलने या पंखा, मोटर, चक्की के घूमने पर आप यकीन कर लेते हैं कि इन चीज़ों से जुड़े तारों में बिजली का करंट मौजूद है और जब कि आप इन चीज़ों में रोशनी या हरकत नहीं देख कसते हालांकि वह चीज़ें अपनी जगह पर सहीह हालत में होती हैं तो आप यह हुक्म लगा देते हैं कि इन तारों में करन्ट नहीं है।

अगर करन्ट वाला तार उपर्युक्त चीज़ों से ज्वाइंट न हो तो आप को केवल उस वक़्त यकीन होगा कि इसमें करन्ट मौजूद है जब इसके

कुछ लक्ष्ण प्रकट हों मिसाल के तौर पर इसे किसी टेस्टर से छूने पर इस टेस्टर में हलकी लाइट नज़र आये या उसकी सूई में कोई हरकत पैदा हो, या हाथ से छूने पर झंझनाहट सी महसूस हो या शार्ट मारे।

तार देखने में भी तार है और हक़ीक़त में भी तार है चाहे उसके ऊपर रबड़ या फलास्टिक चढ़ा हुआ हो या वह नंगा हो, हर हाल में न उसके ऊपर से देखने से उसमें करन्ट नज़र आये गा और न उसे काट कर अन्दर का भाग देखने से करन्ट नजर आयेगा, जो कुछ नजर आयेगा वह केवल इस का तार ही होगा।

जब आप बिजली नहीं देख पाते और न कभी देख पायेंगे फिर भी उसे देखे बगैर केवल उसके लक्ष्ण से उसकी मौजूदगी का यकीन कर लेते हैं तो क्या यह ईमान बिल गैब जैसी बात नहीं हुई? अल्लाह के वजूद के यकीन करने की बात भी इससे विभिन्न नहीं। इस संसार की मज़बूत व्यवस्था एवं योजना और असंख्य लक्ष्ण को देख कर इस संसार के नीतिज्ञ (मुदब्बिर) एवं उच्च प्रशासक अल्लाह के वजूद का यकीन करना एक सरल और स्पष्ट बात है। जब आप अपनी दुनिया संवारने के लिये ''ईमान बिल गैब'' में कोई दुश्वारी महसूस नहीं करते तो अपनी आखिरत (मरने के बाद के जीवन) को संवारने के लिये ''ईमान बिल गैब'' में क्यों दुश्वारी महसूस करने लगते हैं? हमें आपके इस विरोधाभास व्यवहार पर आश्चर्य है।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

१-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। २-अगर आपको हर महीने की ५ तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। ३-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। ४-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। ५- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध्यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। ६- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। ७. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये ३ बजे से ५ बजे तक फून करें। 011-23273407

पानी का महत्व

❑डा० अबुल हयात अश्रफ

कुरआन करीम में अल्लाह तबारक व तआला ने फरमाया है ''और हम ने हर जानदार को पानी से बनाया आखिर वह क्यों ईमान नहीं लाते'' (सूरे अंबिया-३०)

पानी आम तौर से चार विभिन्न रूप और शक्लों में पाया जाता है और यह चारों शक्लें विभिन्न जैविकी के वजूद के लिये अत्यंत आवश्यक हैं। पानी ही जीवन का कारण और असल जीवन है और हमारी इस सौन्दर्य धरती पर पानी पर्याप्त मात्रा में हर जगह मौजूद है।

पानी मिटटी में और खुश्की पर असल शक्ल में मौजूद है और वायुमंडल में भाप (बुखारात) की शक्ल में फैला हुआ है पानी ही की एक किस्म नुतफा है जिन से इन्सानों और हैवानों की रचना होती है।

इन्सान की रचना के बारे में पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''लोगो! अगर तुम्हें मरने के बाद जी उठने में शक है तो सोचो हमने तुम्हें मिटटी से पैदा किया फिर नुतफे से फिर जमे हुये खून से फिर गोश्त के लोथड़े से जो सूरत दिया गया था और वह नकशा था यह हम तुम पर जाहिर कर देते हैं और हम जिसे चाहें एक ठेहराये हुये वक्त तक रहिमे मादर (मां की कोख) में रखते हैं फिर तुम्हें बचपन की हालत में दुनिया में लाते हैं फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुंचों, तुम में से बाज़ तो वह हैं जो फौत कर लिये जाते हैं और बाज़ बेगर्ज उमर की तरफ फिर से लौटा दिये जाते हैं ताकि वह एक चीज़ से बा खबर होने के बाद फिर बेखबर हो जाये'' (सूरे हज-५)

कुरआन की इस आयत में इन्सान के वजूद में आने और वजूद के विभिन्न स्टेजों से गुजरने का एक श्रेष्ठ उल्लेख और बयान है। इन्सान जो कुछ खाता पीता है इसमें इन्सानी वजूद के लिये न तो कहीं कोई बीज नजर आता है और न इन्सानी सलाहियतों (क्षमताओं) के खवास नजर आते हैं मगर इन्हीं खाघान्नों से अल्लाह तआला इन्सान के अपने वजूद में नुतफे तैयार करता है जिससे मर्द औरत, शिक्षित, अशिक्षित, खूबसूरत व बदसूरत, काले गोरे, बुद्धिमान व मंबुद्धि और विभिन्न स्वभाव रखने वाले इन्सान पैदा होते हैं।

मीठा पानी, पानी की तीसरी शक्ल है जो बारिश, स्रोतों, तालाबों और कुवों से प्राप्त किया जाता है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: '' वही तुम्हारे फायदे के लिये आकाश से पानी बरसाता है जिसे तुम पीते हो और उसी से उगे हुये पेड़ों को तुम अपने जानवरों को चराते हो''। (सूरे नह्ल-सूरे नंबर-१६ आयत न०-१०)

कुरआन में अल्लाह ने फरमाया: ''और वही है जो बाराने रहमत से पहले खुशखबरी देने वाली हवाओं को भेजता है और हम आसमान से पाक (पवित्र) पानी

बरसाते हैं ताकि इस के जरिये से मुर्दा शहर को जिन्दा कर दें और इसे हम अपनी मखलूकात (सृष्टियों) में से बहुत से चौपायों और इन्सानों को पिलाते हैं'' (अल फुरकान, सूरे न० २५ आयत न० ४८-४६)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''और अल्लाह ही हवाएं चलाता है जो बादलों को उठाती हैं फिर हम बादलों को खुश्क (सूखी) जमीन की तरफ ले जाते हैं और इससे इस ज़मीन को उसकी मौत के बाद जीवित कर देते हैं इसी तरह दुबारा जी उठना (भी) है'' (सूरे फातिर सूरे नंबर-३५ आयत नम्बर-६)

सूरज की हरारत (उष्मा, गरमाहट) समुद्र, भाप, बादल, हवा और बारिश एक दूसरे के लिये पूरक हैं। नये जानदारों को वजूद में लाने के लिये और मौजूदा तमाम जानदारों के स्तित्व के लिये आशा और खुशी की किरण लेकर बारिश का पानी अवतरित (नाजिल और उतरता) है। बारिश की बूदें जूं ही बेजान मिटटी पर पड़ती हैं, उसमें जिन्दगी की बहारें आ जाती हैं मिटटी बहुत से वजूद की रचना के लिये तैयार हो जाती है। बीजें, दाने गल्ले पानी की तरावट से फूट पड़ते हैं। सबजियां उग आती हैं जैविकी का हर वजूद बारिश के पानी से अपना हिस्सा पा लेता है। सारांश यह है कि मीठा पानी पीने के लिये हो या खेतों की सिंचाई और सैराब करने के लिये, दर्या से प्राप्त किया जाता हो या स्रोत, झरने और कुवें से, बारिश ही का परिणाम है।

इन्सान खाना के बिना चन्द दिनों तक जीवित रह सकता है लेकिन पानी के बिना नहीं रह सकता। पानी खाने को बचाने में सहायक बनता है, शरीर के टम्परेचर (हरारत) को संतुलित रखने में पेड़ पौधों अन्य बनस्पतियों को खूराक पहुंचाने में मदद करता है। शरीर में पानी की मात्रा घट जाने से तरह तरह की बीमारियां लग सकती हैं चूंकि इन्सान के शरीर से रोजाना २.४ लीटर पानी विभिन्न शकलों में निकलता रहता है इसलिये इस कमी की भरपाई स्वास्थ्य के लिये अत्यंत आवश्यक है।

इन्सान को जीवित रहने के लिये पानी की ज़रूरत न केवल जमीन पर होती है बल्कि अन्तरिक्ष में उड़ान के दौरान भी होती है। अतः अन्तरिक्ष में एक पायलेट रोज़ाना २.५ लीटर पानी पीता है। हैवान और पौदे भी पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते। मरूस्थलीय क्षेत्रों में बाज हैवानात अपनी शारीरिक आवश्यकताओं का पानी ऐसी खूराक से हासिल करते हैं जिन में पानी के अंश शामिल होते हैं। बाज पौदे अपने तने की थैलियों में भविष्य के लिये पानी जमा कर लेते हैं।

समुद्र का नमकीन और खारा पानी चौथी किस्म का पानी है जो अत्यन्त नमकीन होने के बावजूद लोगों जानदारों को जीवित रखता है। समुद्र के इस नमकीन खारे पानी को हानिकारक होने के कारण पीने के लिये प्रयोग नहीं किया जा सकता है हमारी धरती के लगभग ७१ प्रतिशत भागों पर समुद्र फैला हुआ है।

समुद्र का पानी नमकीन और ख़ारा होने के बावजूद तरह तरह की मछलियों जानदारों और पौदों का घर ठिकाना है। इन्सान इनसे अपने स्तेमाल के अनेकों सामान प्राप्त करता है।

❑ ❑ ❑

अम्न व शान्ति

❑**डा० सईद अहमद उमरी मदनी**

आज दुनिया अम्न व शान्ति के लिये परेशान है। अम्न व शान्ति एक ऐसी दौलत है जिसके अन्दर ही इबादत और उपासना की मिठास मिलती है, सुबह तक सोने का आनन्द आता है, खाने पीने की असल मिठास अम्न व शान्ति के वक्त ही हासिल होती है। अम्न व शान्ति ही हर विकास की बुनियाद है। पूरी मानव आबादी का असल मकसद यही अम्न व शान्ति है।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जिस किसी ने अपने घर में अम्न के साथ और अपने शरीर में सुख के साथ सुबह की और उसके सामने दिन भर का खाना हो यह ऐसे ही है जैसे कि पूरी दुनिया उसके पास सिमट कर आ गई। (सुनन तिर्मिज़ी २३४६)

अम्न मन के सुखी होने और भय के अन्त होने को कहते हैं। इसी तरफ इशारा करते हुये अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमाया ''अगर मुश्रिकीन में से कोई भी तुम से पनाह (शरण) मांगे तो उसको पनाह दे दो यहां तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले फिर उसको उसके अम्न की जगह पर पहुंचा दो इसलिये कि यह लोग ऐसी कौम हैं जो जानते नहीं हैं'' (सूरे तौबा आयत-६)

इस आयत की व्याख्या में अल्लामा रागिब असफहानी लिखते हैं ''उसको उस जगह तक पहुचां दो जिसमें उसके लिये सुख शान्ति हो, मन को सन्तुष्टि हो, वहां उसको किसी प्रकार का भय न हो।

इस्लाम की दृष्टि से अम्न व शान्ति उस हालत या अवस्था को कहा जाता है जिसमें देश के अन्दर कानून का उल्लंघन न हो। ऐसी कार्रवाई की जाये जिस की वजह से अपराध की रोक थाम आसान हो जाये। अम्न व शान्ति इन्सान की जिन्दगी में हृदय या मन के सुखी होने और भय के दूर होने का नाम है। एक ऐसे बेहतरीन वातावरण का नाम है जिस में इन्सान आराम से अपने लक्ष्यों और उद्देशों को प्राप्त कर सकता है। अम्न व शान्ति किसी कौम को प्राप्त हो जाये तो उसकी सभ्यता और संस्कृति का विकास एवं उन्नति होती है, अम्न व शान्ति के अभाव से विकास रूक जाता है इसी लिये इस्लाम ने अम्न व शान्ति को बहुत बड़ी नेमत करार दिया है।

लोगों को हर प्रकार की मुसीबत और दुख से बचाने का नाम अम्न व शान्ति है, देश को दुश्मनों से बचाने का नाम अम्न व शान्ति है, रास्तों को ठीक करने और रास्तों में उजाला करने का नाम अम्न व शान्ति है। मजलूम का अधिकार जालिम से दिलवाने का नाम अम्न व शान्ति है। हर हक़ वाले को उसका हक़ दिलाने का नाम अम्न व शान्ति है।

अंधकाल (दौरे जाहिलियत या अज्ञानताकाल) में भी अल्लाह ने मानवता पर उपकार किया तो अल्लाह के घर काअूबा को अम्न की जगह बना दिया। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने हरम को अम्न वाला शहर बनाया जब कि उनके अतराफ के लोग उचक लिये जा रहे थे'' (सूरे अंकबूत आयत-६७)

यह तो अज्ञानता काल की बात हुई। इस्लाम धर्म के आने के बाद अल्लाह ने कुरआन और हदीस के माध्यम से दुनिया के लिये अमन व शान्ति को आम किया।

❑ ❑ ❑

बच्चों को समझाने का सहीह तरीक़ा

❑**नियाज़ अहमद मदनी तैयबपूरी**

यहां कुछ उसूल और ज़ाबते बताये जा रहे हैं आदमी बच्चे की गुमराही के एतेबार से उनपर अमल करे, अपने तजर्बात से फाएदा उठाए, समाज के किसी समझदार आदमी से मशवरा भी ले। अल्लाह से बराबर दुआ करे और दिल की अथाह गहराइयों से, अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा और उसके बच्चे को गुमराही की दलदल से निकाल देगा, बच्चे का न पढ़ना बहुत बड़ी कमी है इंसान अपने गुनाहों से तौबा करे।

१. आमादा करनाः

प्रेम, मुहब्बत और नर्मी से उसे समझाएं, इतना प्यार दें कि उसके दिल और दिमाग में उतर जाए और उसे तैयार कर लें कि वह अब अच्छे से पढ़ेगा और कोई ग़लत काम नहीं करेगा।

मारना पीटना, सख्ती करना, सबके सामने बे इज़्ज़त करना, गाली देना सख्त सज़ा देना, मदर्सा या घर से निकालना मसले का हल नहीं। कुछ मदर्सों में छड़ी का सहारा लिया जाता है, यह गलत है ऐसा करना मोनासिब नहीं, फिर भी कुछ हालात में थोड़ी सी सखती करना ज़रूरी हो जाता है।

२. बच्चे को काम में मशगूल करनाः आदमी की कमाई का जो ज़रीआ है उसमें लगा दें, ताकि गलत सोच या काम से उसकी तवज्जोह हट जाए और अच्छे कामों में लग जाएं जैसे मेडिकल स्टोर जनरल स्टोर खेत खलियाना, कम्पियूटर पर कुछ टाइम काम करन आदि।

३. तन्हाई में समझानाः बच्चे को बहुत प्यार और मुहब्बत के साथ तन्हाई में समझाना, समझाने में उसकी तारीफ भी करना, तारीफ से खुश हो जाएगा।

सख्ती न करना

सबके सामने मारना नहीं

सबके सामने डांटना नहीं

४. बहुत ज्यादा उम्मीदों नहीं लगानी चाहिए, उनसे कुछ न कुछ गलती हो सकती है। जब बड़े होंगे या समझदार होंगे तो अल्लाह की तौफीक़ से संभल जाएंगे।

५. खेल का अवसर प्रदान करनाः

बच्चों को खेलना अनिवार्य है। अगर मैदान न पाएं तो जिम में जा कर व्यायाम करें या घर ही पर खेलें।

६. अच्छे दोस्तों का चयन

बच्चे के लिए अच्छे दोस्तों का इन्तिखाब करें और उसे बुरे साथियों से दूर रखें।

७. असलाफ़ के किस्से सुनाएं।

अंबिया, मोफस्सिरीन, मोहद्दिसीन, फोकहा और बुजुर्गों की अमानत, शराफत, दीन के रास्ते में मेहनत और उनकी कामियाबी के क़िस्से सुनाएं। इसके द्वारा उसके अन्दर अच्छाइयों से लगाव और बुराइयों से नफ़रत का मेज़ाज़ पैदा करें।

८. बच्चे के ऐब पर पर्दा डालनाः

बच्चे के ऐब पर पर्दा डालें, दूसरों के सामने उसकी बुराई न

करें।

१. मजबूरी की हालत में माहौल बदल दें पर ऐसा करना कई बार बहुत कठिन होगा।

१०. आखिर में मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बाप और सरपरस्त अपने पिछले तजर्बों से फाएदा उठाएं, वह गौर करें कि उनका लड़का कहीं ऐसा खेल तो नहीं खेल रहा है जो उसके ध्यान को शिक्षा से फेर दे और नतीजा में जाहिल रह जाये या ज़्यादा न पढ़ सके।

तालीम में ग़फ़लत का नतीजा

१. बच्चे निकम्मा और नाकारा हो जाएंगे।

२. उनकी सलाहियत कम हो जाएगी।

३. उनकी सलाहियत गलत रूख अखतियार कर सकती है।

४. बुराइयों में पड़ कर उनका दीन भी जाएगा और दुनिया भी।

४. सन्तान जो आंखों का नूर और दिल का सुरूर है बिगड़ने के बाद कांटे की तरह खटकेगी।

५. बाप दादा की कमाई बेदर्दी के साथ खर्च कर सकते हैं।

७. अपनी बदअखलाकी और बेदीनी से अपने धर्म और खानदान को बदनाम करेंगे।

८. सम्भवतः जराएम पेशा होकर सबको सताएंगे।

९. समाज के लिये नकारात्मक साबित होंगे।

१०. सबके लिए दर्दे सर साबित होंगे।

११. मां बाप की इच्छाओं और सारी आशाओं पर पानी फिर जाएगा।

❑ ❑ ❑

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

ज्ञान, कर्म, आमंत्रण और सब्र

मुहम्मद बिन सुलैमान अत्तमीमी रहि०

जिससे अल्लाह उसके पैगम्बर और दीन इस्लाम की पहचान दलीलों की रोशनी में हासिल हो ज्ञान कहलाता है, ज्ञान प्राप्त करने के बाद ज्ञान के अनुसार अमल करना, फिर ऐसे ज्ञान और अमल (कर्म) की तरफ लोगों को आमंत्रित करना फिर दावती काम करते समय कठिनाइयां पेश आयें तो उन्हें सब्र से सहन करना, यह बातें ऐसी हैं जिनका सीखना हर इन्सान पर वाजिब है। इस की दलील कुरआन की सूरे अस्र है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''जमाने की कसम बेशक इन्सान घाटे में है, मगर वह लोग जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे, आपस में हक बात की तलकीन और सब्र की ताकीद करते रहे । (सूरे अस्र)

इमाम शाफई रहमतुल्लाह अलैहि सूरे अस्र के बारे में फरमाते हैं

''अगर अल्लाह तआला अपनी मखलूक पर इसी सूरे को नाजिल कर देते तो यह उनके लिये काफी होती''।

कुरआन मजीद की आयत से पता चलता है कि ज्ञान का दर्जा पहला है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''खूब अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं, अपने गुनाहों की मआफ़ी मांगो और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये भी'' (सूरे मुहम्मद १९)

इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल रह्मातुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि इस आयत की शुरूआत ''फअ्लम'' से हुई जिस से मालूम होता है कि अल्लाह तआला के यहां ज्ञान का पहला दर्जा है हमेशा सहीह ज्ञान की बुनियाद सहीह ज्ञान ही होती है।

सबसे पहले ज़ेहन में यह चीज़ बैठ जाये कि अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया, इसी ने हम सबको रोजी दी, और उसने हमें बेलगाम नहीं छोड़ा बल्कि हमारी तरफ रसूल स०अ०व० को भेजा जिसने अल्लाह का हुक्म माना वह जन्नत में जायेगा और जिसने उसके हुक्म को मानने से इन्कार किया वह नरक में जायेगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''हम ने तुम्हारी तरफ तुम पर गवाही देने वाला एक रसूल इस तरह से भेजा है कि जिस तरह फिरऔन की तरफ एक रसूल भेजा था। फिर फिरऔन ने उस रसूल की नाफरमानी (अवज्ञा) की तो हमने उसे अत्यंत सख्ती से पकड़ लिया''। (सूरे मुज्जम्मिल-१५)

अल्लाह ने अपनी इबादत (उपासना) में शिर्क को नापसन्द किया है उसे न तो किसी विशेष फरिश्ते की शिर्कत (साझेदारी) पसन्द है और न किसी पैगम्बर की। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''बेशक मस्जिदें अल्लाह ही के लिये हैं तुम अल्लहा के साथ

किसी और को न पुकारो''। (सूरे जिन्न-१८)

मिल्लते इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मतलब यह है कि तुम पूरे निस्वार्थ के साथ एक अल्लाह की इबादत करो। इसी बात का अल्लाह तआला ने तमाम लोगों और पूरी सृष्टि को हुक्म दिया है।

इबादत के बारे में दलील कुरआन की यह है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''मैंने जिन्नों और इन्सानों को पैदा ही इस लिये किया कि वह मेरी इबादत करें'' (सूरे जारियात ५६)

कुरआन की इस आयत में प्रयोग ''यअ्बुदून'' का अर्थ यह है कि तमाम जिन्न व और इन्सान मेरी तौहीद (एक अल्लाह की उपासना) के कायल हो जायें, मेरी पूजा परें, और साथ ही इस बात को स्वीकार कर लें कि मैं उन्हें अच्छे कामों का हुक्म देता हूं और बुरे कामों से रोकता हूं इबादत या बन्दगी का अर्थ यह है कि अल्लाह के हर आदेश का पालन किया जाये और जिस चीज़ से अल्लाह रोक दे उससे पूरी तरह दूर रहा जाये।

आओ और इसी दुनिया में भला पाओ

❑ **मुहम्मद उस्मान फारकलीत**

तुम्हें शायद मालूम न हो, शायद क्या, तुम्हें बिलकुल पता न हो गा कि तुम्हारी पैदाइश के बाद तुम्हारे कानों में सबसे पहली आवाज, अजान की आवाज डाली गयी थी और तुम्हें बताया गया था कि अल्लाह एक है, अल्लहा बेमेसिाल है, वह बहुत बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, तुम नमाज़ की तरफ आओ, नमाज ही तुम्हारी कामयाबी है, अल्लाह ही बड़ा है, अल्लाह के बराबर कोई नहीं, यह आवाज तुम्हारे कानों में पड़ी, तुमने इस आवाज़ को सुना और अपने दिल व दिमाग में जगह दी। अपनी जिन्दगी का मकसद सब से पहली बार तुम ने सुना, गौर करो, क्या तुम्हें भी यह अवाज याद है? कौन था जो तुम्हारे और इस आवाज के दर्मियान रूकावट बना और तुम को तुम्हारा सबक भुला दिया? तुम ताश खेलते हो, कैरम खेलतो हो मगर तुम्हें याद है कि तुम्हारी पैदाइश के चन्द मिन्टों बाद ही तुम्हें क्या पढ़ाया गया था, तुम्हें क्या सिखाया गया था और तुम्हें क्या शिक्षा दी गयी थी? यह कि अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई बड़ा नहीं, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह के सिवा कोई बड़ा नहीं, अल्लाह के बराबर कोई नहीं, यह सब कुछ तुम्हें पढ़ाया गया मगर क्या तुम सारे पाठ भूल गये? क्या तुमने यह सब कुछ पढ़ा पढ़ाया भुला दिया?

अब फिर आओ इस्लाम की तरफ आओ नमाज़ की तरफ, इस्लाम की तरफ तुम्हारा आना ज़रूरी है, न आओगे तो तुम्हारी नसलें खराब होंगी, अब फिर आओ इस्लाम की तरफ, उस स्टेज की तरफ जहां से तुम्हारी जिन्दगी शुरू हुई थी और तुम ने सांस लेना सीखा था। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और अल्लाह तुम को सलामती की तरफ बुलाता है अल्लाह जिस को चाहता हे सीधे रास्ते पर ले आता है''

इस्लाम की तरफ आना शर्त है इसके बाद गुमराहियों के तमाम दरवाजे बन्द हो जायेंगे। (लेख का आंशिक भाग)

❑ ❑ ❑

मानवता की सुरक्षा, महत्ता एवं आवश्यकता

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फ़रमायाः जिसने किसी मुआहिद अर्थात गैर मुसिलम नागरिक की हत्या की तो वह जन्नत की खुश्बूत नहीं सूंघ सकेगे जबकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी की यात्रा तय करने तक महसूस की जाती है। (सहीह बुखारी ३/११५, इब्ने माजा २/८६६, बज्जार २३८३)

इस्लाम दया, करूणा वाला धर्म है उसने मानव सुरक्षा और अम्न व शान्ति की स्थापना के लिये व्यवहारिक उपाय पेश किये लोगों को चरित्रवान बनाने के साथ साथ पूरी मानवता को अम्न व शान्ति का सन्देश सुनाया और इस धरती पर अत्याचार और फसाद के खात्मे का एलान किया और हर प्रकार के हिंसा, फसाद, हत्या और आतंकवाद को हराम करार दिया और एक इन्सान के नाहक कत्ल को पूरी मानवता की हत्या के समान करार दिया। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो शख्स किसी को बगैर इसके कि वह किसी का कातिल हो या जमीन में फसाद मचाने वाला हो, कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम लोगों को कत्ल कर दिया और जो शख़्स किसी एक की जान बचा ले उसने गोया तमाम लोगों को जिन्दा कर दिया'' (सूरे माइदा-३२)

शुरू में उपर्युक्त हदीस से पता चलता है कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो मानव सेवा के सबसे बड़े और सच्चे समर्थक थे। आपने अपनी पूरी जिन्दगी मानवता के लिये खर्च कर दी ताकि इस धरती से बुराई का खात्म हो जाये, लोग खुशहाल जिन्दगी गुजारने लगें, समाज शान्ति पूर्ण, खुशगवार, और सुखमय हो जाये, लोग एक हो जायें, किसी भी प्रकार का न कोई भेद भाव हो और न ही कोई भय।

हर जगह शान्ति ही शान्ति हो, समृद्धि ही समृद्धि हो, प्यार मोहब्बत का वातावरण हो लोग मानवता की बुनियाद पर एक दूसरे के अधिकारों की अदायगी करें।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने मानवता को इतना सम्मान दिया और इन्सानी प्राण की सुरक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिये फरमाया कि तुम में से कोई शख्स अपने भाई की तरफ इशारा न करे, तुममें से कोई नहीं जानता कि शायद शैतान उसके हाथ को डगमगा दे और नाहक कत्ल के परिणाम में जहन्नम के गडढ़े में जा गिरे। और अबू दाऊद की एक हदीस में यहां तक आया है कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने नंगी तलवार लेने देने से भी मना किया है।

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद

स०अ०व० की पूरी ज़िन्दगी इस बात की प्रतीक और प्रेरक है कि आपने मानवता की बुनियाद पर सबको उनका पूरा हक दिया और किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं किया। आज लोगों में यह गलत फहमी (भ्रम) है कि हज़रत मुहम्मद स०अ०व० और उनके सहाबा (साथियों) ने गैर मुस्लिमों के जान व माल और उनके मान सम्मान को हलाल कर दिया जबकि यह सरासर झूठ और मानवता के उपकारक पर झूठ और निराधार आरोप है। हदीस की किताब मुसनद अहमद और अबू दाऊद में है हज़रत खालिद बिन वलीद बयान करते हैं कि हम हज़रत मुहम्मद स०अ०व० के साथ ख़ैबर में मौजूद थे लोग जलदी से यहूद के बाड़ों में घुस गये, आपने मुझे अजान देने का हुक्म दिया इसके बाद आपने फरमाया कि तुम जल्दी में यहूद के बाड़े में घुस गये हो सुन लो! सिवा-ए-हक के गैर मुस्लिम शहरियों के माल से लेना हलाल नहीं, और एक दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद अल्लाह ने खैबर के मौके पर गैर मुस्लिम शहरियों के माल पर कबजा करने को हराम करार दिया है। बेशक तुम्हारा खून, तुम्हारा माल, तुम्हारी स्मिता तुम्हारे ऊपर ऐसे ही सम्मानीय है जैसा कि आज का यह दिन सम्माननीय है। इस हदीस में भी मानवता की सुरक्षा और सम्मान पर विश्व-विधान है। सम्मान, जान माल, अक्ल, दीन और आचरण की सुरक्षा का कर्तव्य इस्लाम में मानव-सुरक्षा की जहां जमानत है वहीं शराब, जुवा, प्रदूषण, ढगी, घोकाधड़ी की हुर्मत (अवैधता) भी मानतवा की सुरक्षा के लिये आवश्यक है। मानव-सुरक्षा के सिलसिले में हैवान, बनस्पति, (निर्जीव) यहां तक कि नजिस जानवरों की सुरक्षा और उनके साथ दया करूणा और उनकी सेवा पर भी इस्लाम बल देता है क्यों कि मानवता की बका, सुरक्षा और सेवा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सिलसिले में प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने की वजह से जन्नत की शुभसूचना देने वाली हदीस का संदर्भ काफी है।

हदीस की किताबों में मानव सुरक्षा के संबन्ध में दर्जनों ऐसी हदीसें और शिक्षाएं मिलेंगी जिनसे इस बात का अन्दाजा होता है कि मानव सुरक्षा उन महत्वपूर्ण और बुनियादी बातों में से है जिसके बिना इंसानियत की पहचान खत्म हो जाती है। कुरआन का मानव सम्मान और स्मिता की सुरक्षा के हवाले से यह सबसे बड़ा सम्मान है कि हमने आदम की सन्तान को बड़ी इज्ज़त दी और उन्हें खुश्की और तरी में समुद्र की सवारियों दीं और उन्हें पवित्र चीजों की रोजियां दीं और अपनी बहुत सी सृष्टि (मखलूक) पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की। इस लेख में उल्लिखित कुरआन की आयत मानव सम्मान के अध्याय में एक मूल सिद्धांत है जिससे इन्सान का श्रेष्ठ होना निर्धारित करता है।

अल्लाह से दुआ कि हम तमाम लोगों को मानवता की सुरक्षा की भावना रखने की क्षमता और मानवीय आधार पर एक दूसरे पर एक दूसरे के अधिकार को जानने पहचानने और व्यवहारिक रूप देने की क्षमता दे। आमीन

❑ ❑ ❑

शान्ति की बुनियाद

❑ **मनसूर इबराहीम**

जिन्दगी अम्न व शान्ति ही से ही बाकी रह सकती है इसलिये बिना अम्न के सुकून और संतुष्टि हासिल नहीं हो सकता और आखिरी दर्जे का सुकून सच्चे विश्वास से मिलता है।

कुरआन कहता है ''जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने अपने ईमान को जुल्म से संल्पित नहीं किया उनके लिये अम्न है और वही हिदायत पाने वाले हैं'' हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम ने इस तरफ खास इशारा किया है।

''और जब इब्राहीम ने कहा ऐ अल्लाह इस शहर को अम्न की जगह बना दे और उसके वासियों को फलों से रिज़्क दे''। इस तरह उन्होंने अम्न और ईमान को जमा कर दिया अम्न सुख और संतुष्टि का नाम है और ईमान की बुनियाद भी दिल के सुकून और आस्था के ठेहराव पर है। व्यक्ति का अम्न उसकी कौम के अम्न का भाग है इसलिये कि स्वयं व्यक्ति भी अपने समाज का एक भाग ही होता है। अगर समाज को अम्न प्राप्त नहीं होता है तो कोई भी अम्न व इतमीनान की जिन्दगी नहीं गुजार सकता। इसलिये सबसे ज्यादा जरूरी चीज यही है कि व्यक्ति और समाज दोनों के लिये सहयोग करें और व्यक्ति उन सीमाओं का ख्याल और पास रखे यह समाज के अम्न व इतमीनान के लिये ज़रूरी है।

इस इतमीनान को प्राप्त करने का तकाज़ा यह है हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी अदा करे अपनी एमानत की सुरक्षा करे और हर उस जिम्मेदारी को पूरा करे जो उस पर डाली गयी इसलिये कि हर व्यक्ति जिम्मेदार है और अल्लाह के सामने और लोगों के सामने उसे जवाब देना है।

कुरआन सच्चे मुसलमानों की खूबी यह बयान करता है ''और वह लोग जो अपनी एमानतों और वादों की हिफाज़ करते हैं''

बहुत से लोगों का ख्याल है कि एमानत केवल रूपयों पैसों के मामलों में है लेकिन यह ख्याल गलह है इसलिये कि एमानत हर उस चीज़ में है जो इन्सान से संबन्धित है इसलिये ज़रूरी है कि इस मामले को इन्सान पूरी तरह समझ ले और हर मुस्तहिक (पात्र) को एमानत हक़ के साथ अदा करें। अल्लाह के इस कथन से भी यही बात समझ में आती है कि ''अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि एमानतों को उनके हकदारों तक पहुंचाओ''।

इस सुरक्षा में यह अर्थ भी शामिल है कि इन्सान अपनी करनी और कथनी से उस चीज़ को जाहिर न करे जो उस के पास एमानत के तौर पर हो। खास तौर से ऐसे मामलों में एमानत की सुरक्षा होना बहुत ही ज़रूरी है जो राष्ट्र के हित के बारे में हो। बहुत से महत्वपूर्ण मामले ऐसे होते हैं जिन को जाहिर करना या उनके बारे में बात करना सख्त नुकसानदेह होता है और तय वक़्त तम उन मामलों के बारे में बात न की जाये तो बहुत से फायदे हासिल होते हैं और बहुत से नुकसानात से बचा जा सकता है।

❑ ❑ ❑

कत्ल महा पाप है

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अज्जहबी रहि०

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''वह शख्स जो किसी मोमिन को जान बूझ कर कत्ल कर दे तो उसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह रहेगा उस (कातिल) पर अल्लाह का गजब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिये सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है'' (सूरे निसा)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

''वह लोग जो कि अल्लहा के साथ किसी दूसरे मअबूद (अपास्य) को नहीं पुकारते और जिस जान के मारने से अल्लाह ने मना किया है उसको नाहक नहीं मारते और न जिना (व्यभिचार) करते हैं और जो कोई यह काम करेगा वह अपने गुनाह (पाप) की सज़ा भुगते गा, क्यामत (प्रलय) के दिन उसको दो गुना अज़ाब हो गा और वह इसमें हमेशा के लिये जलील व खुवार (अपमानित) होगा मगर जिन लोगों ने तौबा की होगी और वह ईमान लाये होंगे और नेक आमाल (सत्कर्म) किये होंगे'' (सूरे फुरकान-६८)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''इसी वजह से बनी इस्राईल पर हमने यह फरमान लिख दिया था कि जिसने किसी इन्सान को खून के बदले या जमीन में फसाद फैलाने के सिवा किसी और वजह से कत्ल किया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल किया और जिसने किसी की जान बचाई उसने गोया तमाम इन्सानों को जिन्दगी बख्श दी''। (सूरे माइदा-३२)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''और जब जिन्दा गाड़ी हुयी लड़की के हक़ में सवाल होगा कि वह किस जुर्म में मारी गयी थीं''। (सूरे तकवीर-९)

सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया:

सात हलाक कर दे वाले गुनाहों से बचो जिसमें फरमाया किसी का हराम और नाहक तौर पर कत्ल करना हेलाकत का सबब है। (बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नेसाई)

अर्थात जिसने किसी को नाहक कत्ल कर दिया उसने अपने आप को हलाक कर दिया।

एक आदमी ने अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से पूछा कि अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह क्या है? फरमाया कि तुम अल्लाह का शरीक (साझीदार) ठहराओ जबकि वह तुम्हारा खालिक (सृष्टा) है। फिर पूछा इसके बाद कौन सा? फरमाया कि तुम अपने बच्चे को इस डर से कत्ल कर दो कि बड़ा होकर तुम्हारा खाना खायेगा फिर पूछा इसके बाद? फरमाया कि अपने पड़ोसी की बीवी के साथ जिना करना। (बुखारी)

बुखारी मुस्लिम ने बिना आयत के बयान किया है। मुनजिरी ने तरगीब तरहीब में कहा कि तिर्मिज़ी और नेसाई ने आयत के साथ रिवायत किया है। सबने हज़रत अबू मसऊद अंसारी से रिवायत किया है।

अल्लाह तआला ने इसकी पुष्टि में यह आयत अवतरित की

''और वह लोग अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअबूद नहीं पुकारते और जिस जान के मारने से अल्लाह ने मना किया है उसे नाहक नहीं मारते और न ज़िना करते है''। (सूरे फुरकान-६८)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः कि जब दो मुसलमान तलवार लेकर आपस में लड़ें तो कातिल और मकतूल दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) यह तो कातिल है लेकिन मकतूल (जिसका कत्ल किया गया) को यह सज़ा क्यों होगी फरमाया इस लिये कि वह मददे मुकाबिल को कत्ल करना चाहता था। (मुसनद अहमद, बुखारी, मुस्लिम)

संन्देष्टा (पैगम्बर) मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया लोगों में कयामत के दिन सबसे पहले खून का फैसल किया जाये गा (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नेसाई, इबने माजा)

अल्लाह के सन्देष्टा मुहम्मद स० अ०व० ने फरमाया जब किसी इन्सान का नाहक कत्ल होता है तो उसके खून का एक भाग आदम के पहले बेटे के नाम लिखा जाता है इस लिये कि कत्ल का तरीका उसी ने निकाला है। (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने किसी गैर मुस्लिम को जो इस्लामी शासन में संधि के साथ रह रहा हो, कत्ल किया तो वह जन्नत की बू भी नहीं पा सकता जबकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी)

हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः कि जब दो मुसलमान तलवार लेकर आपस में लड़ें तो कातिल और मकतूल दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) यह तो कातिल है लेकिन मकतूल (जिसका कत्ल किया गया) को यह सज़ा क्यों होगी फरमाया इस लिये कि वह मददे मुकाबिल को कत्ल करना चाहता था। (मुसनद अहमद, बुखारी, मुस्लिम)

नोटः- इस्लामी हुकूमत हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी समुदाय से संबन्ध रखता हो उसके जान माल सम्मान और अन्य चीज़ों की रक्षा की गारन्टी लेती है। अगर किसी मुस्लिम ने किसी निर्दोष को कत्ल कर दिया चाहे मरने वाला किसी भी समुदाय से संबन्ध रखता हो तो वह इस्लामी कानून की पकड़ से बच नहीं सकता है।

बाज रिवायात में कत्ले मुस्लिम की सज़ा की जो बात कही गयी है वह उस जगह के लिये है जहां केवल मुसलमान बसते थे वरना कत्ल की सज़ा आम है। कुरआन करीम में अल्लाह तआला फरमाता है ''इसी वजह से बनी इस्राईल पर हमने यह फरमान लिख दिया था कि जिसने किसी इन्सान को खून के बदले या जमीन में फसाद फैलाने के सिवा किसी और वजह से कत्ल किया उसने गोया तमाम इन्सानों को कत्ल किया और जिसने किसी की जान बचाई उसने गोया तमाम इन्सानों को जिन्दगी बख्श दी। (सूरे माइदा-३२)

सम्पादक

इस्लाम में आस्था का महत्व

❑**अब्दुल अज़ीज बिन बाज़ रहि०**

सहीह आस्था ही इस्लाम धर्म की बुनियाद है। कुरआन और हदीस से यह साबित है कि अल्लाह के यहाँ वही आमाल मकबूल (मान्य) होंगे जिन की बुनियाद सहीह अकीदे (आस्था) पर होगी। सहीह अकीदे के बिना हर कर्म बेकार है और अल्लाह के यहां उसकी कोई वैलू नहीं है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''और जो ईमान का इन्कार करेगा तो उसका कर्म बर्बाद हो गया और वह आखिरत में नुकसान उठाने वालों में से होगा'' (सूरे माइदा, पारा ५ आयत न० ५)

कुरआन में अल्लाह तआला फमाता है:

'' और निसन्देह आप की तरफ और उन लोगों (नबियों) की तरफ जो आप से पहले हुये यह वह्य (प्रकाशना) की गयी कि अगर आपने शिर्क किया तो यकीनन आप के कर्म बर्बाद हो जायेंगे और निसन्देह आप अवश्य खसारा उठाने वालो में से हो जायेंगे''। (सूरे जुमर पारा नंबर ३९ आयत-६५)

कुरआन में इस अर्थ की बहुत सी आयतें हैं। अल्लाह तआला की किताब कुरआन और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत (कथनी, करनी और अन्य कर्मों को दी गयी मान्यता) से जिस सहीह अकीदे के सवरूप स्पष्ट होते हैं उसका सारांश यह है अल्लाह तआला उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आखिरत के दिन पर ईमान और इस बात पर ईमान कि अच्छी और बुरी तकदीर अल्लाह तआला की तरफ से है। इन छः स्तंभों पर इस्लाम की बुनियाद है जिसको मज़बूत करने के लिये अल्लाह की किताब अवतरित (नाज़िल) हुई है और इसी के लिये अल्लाह ने अपने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा।

अल्लाह और उसके रसूल ने जिन अनदेखी (गैब की बातों) की खबर दी है और जिन पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है सबकी सब इन्हीं छः बुनियादी स्तंभों की व्याख्या है जो कुरआन और हदीस के जरिये की गयी है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

''नेकी यह नहीं है कि तुम अपने मुंह मश्रिक और मगरिब की तरफ फेर लो बल्कि असल नेकी तो उस शख्स की है जो अल्लाह पर आखिरत के दिन पर (आसमानी) किताबों पर और नबियों पर ईमान लाये'' (सूरे बक़रा-१७७)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम उस (हिदायत) पर ईमान लाये हैं जो उनके रब की तरफ उन पर नाज़िल की गयी है और सभी मोमिन भी, अल्लाह पर उस के फरिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाये हैं (वह कहते हैं) हम उसके रसूलों में से किसी एक में फर्क़ नहीं करते'' (सूरे बकरा, आयत-२८५)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

'' ऐ लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह, उसके रसूल और उस

किताब पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल की और उस किताब पर भी जो उसने पहले नाज़िल की और जो शख्स अल्लाह उसके फरिश्तों उसकी किताबों उसके रसूलों और आखिरत के दिन का इन्कार करे तो निसन्देह वह बहुत दूर की गुमराहियों में जा पड़ा'' (सूरे निसा सूरे नम्बर ४ आयत नम्बर १३६)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, निसन्देह यह सब कुछ किताब (लौह महफूज़) में दर्ज है, बेशक अल्लाह पर यह बिल्कुल आसान है। (सूरे हज आयत नंबर-७०) बुनियादी आस्था के बारे में सबसे मश्हूर हदीस यह है जिस में जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा तो आप ने फरमायाः

''ईमान यह है कि तुम अल्लाह तआला, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आखिरत के दिन पर ईमान लाओ और इस बात पर ईमान लाओ कि अच्छी बुरी तकदीर अल्लाह तआला की तरफ से है। (सहीह मुस्लिम-८)

अहले हदीस कम्पलैक्स और अहले हदीस मंज़िल के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल विभिन्न राज्यों के दौरे पर। इन्शाअल्लाह

जमाअती मित्रों और कौम व मिल्लत के शुभचिंतकों को मालूम है कि अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में दो भव्य तारीखी बिलडिंगों के निमार्ण का काम जारी है। इस सिलसिले में अल हम्दुलिल्लाह अहले हदीस कम्पलैक्स के महान निमार्ण प्रोजेक्ट की दूसरी मंज़िल की ढ़लाई का काम हुआ चाहता है और अहले हदीस मंज़िल में तरमीम और निमार्ण का काम तीसरी मंज़िल तक पहुंच चुका है जो अल्लाह के फज्ल व तौफीक के बाद मुहसिनीने जामअत व जमीअत की सखावत व दानवीरता की देन है। अधिकृत सहयोग के लिये अहबाबे जमाअत सूबाई जमीअतों से तनसीक़ के बाद मस्जिदों में बाजाबता और मुसलसल एलान फरमायें।

जल्द ही मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल आप की खिदमत में हाज़िर हो रहा है। इस महान और तारीखी खैर के काम में अपना भर पूर हिस्सा और रोल अदा करके पुण्य के पात्र बनें।

नोटः- इस सिलसिले में संबन्धित राज्यों के पदधारियों और जिम्मेदारान को सूचना दे दी गयी है।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c 629201058685 (ICICI Bank) Chandni Chowk, Delhi-6
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICICOO06292)

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्यारी बातें

❑ **मुहम्मद फारूक**

अल्लाह तआला उस बन्दे को तरो ताज़ा रखे जिसने मेरी बात सुनी उसे याद रखा और फिर उसे मेरी तरफ से आगे पहुंचा दिया। (सहीहुल जामे अस्सगीर-६७६५)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस फरमान की बुनियाद पर प्यारे रसूल के कुछ कथन पेश किये जा रहे हैं। अल्लाह हम सबको अमल की क्षमता दे।

१. तुम में से बेहतर शख्स वह है जो कुरआन सीखे और सिखलाए। (सहीह़ बुखारी-५०२७)

२. जो छोटों पर दया और बड़ों का आदर सम्मान नहीं करता वह हम में से नहीं। (जामेअ् तिर्मिज़ी १९१९)

३. चुगल खोर जन्नत में दाखिल नहीं होगा। (मुस्लिम-१०३)

४. मुसलमान वह है जिस की जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें। (सहीह बुखारीः१०)

५. एक दूसरे को तोहफे दिया करो इससे आपस में मुहब्बत बढ़ेगी (सहीहुल जामेअ्-३००४)

६. जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्रगुज़ार नहीं। (जामेअ् तिर्मिज़ी १९५५)

७. तुम धरती वालों पर दया करो आसमान वाला (अल्लाह) तुम पर दया करेगा। (बुखारी, सहीहुल जामेअ् अस्सगीर-८९६)

८. तुम अत्याचार से बचो यकीनन अत्याचार क्यामत के दिन अंधेरों में से एक अंधेरा है। (सहीह़ मुस्लिम २५७८)

९. जो अपने भाई को कोई फायदा पहुंचा सकता हो उसे चाहिये कि वह उसे फायदा पहुंचाए। (सहीह़ मुस्लिम २१६९)

१०. फज्र की दो रकअत नमाज दुनिया और जो कुछ दुनिया में है उन सबसे बेहतर है। (सहीह़ मुस्लिम -७२५)

११. दो वाक्यसूत्र (कलिमे) जुबान पर बहुत हलके हैं मीज़ान अर्थात तराजू (सवाब के एतबार) से बहुत भारी हैं और वह रहमान को पसन्द हैं। वह दो कलिम यह हैं सुब्हानल्लाही व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम (सहीह़ बुखारी-६६८२)

१२. कपटाचारी (मुनाफिक) की तीन पहचान है जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो वादे को तोड़े, और एमानत दी जाये तो ख्यानत करे (सहीह बुखारी-३३)

१३. तुम में से कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन (मुसलमान) नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (सहीह बुखारी-१३)

१४. जो अल्लाह और परलय (मरने के बाद के जीवन पर) यकीन रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या फिर खामोश रहे। (सहीह़ मुस्लिम-४८)

१५. अल्लाह तआला तुम्हारे

चेहरों और तुम्हारे माल को नहीं बल्कि तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम-२५६४)

१६. ऐ लोगो! अल्लाह से तौबा और उससे क्षमायाचना करो मैं अल्लाह से दिन में सौ बार तौबा करता हूं। (सहीह मुस्लिम-२७०२)

१७. नरक की आग से बचो चाहे खुजूर के एक टुकड़े ही को सदका खैरात करके बच सको। (सहीह़ बुखारी-१४१७)

१८. जो शख्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करे। (सहीह बुखारी-६१३८)

१९. जो बन्दा दुनिया में किसी बन्दे के ऐब को छिपाता है अल्लाह क्यामत के दिन उसके ऐबों पर पर्दा डालेगा। (सहीह़ मुस्लिम २५६०)

२०. अजान और एकामत के बीच की दुआ रदद नहीं होती। (जामेअ तिर्मिज़ी ३५६५)

२१. मजलूम की बददुआ से बचो क्योंकि उसकी दुआ और अल्लाह के दर्मियान कोई रूकावट और पर्दा नहीं (सहीह़ बुखारी १४६६)

२२. दो नेमतें ऐसी हैं जिन की अधिकांश लोग कद्र नहीं करते, सेहत और वक़्त। (सहीह़ बुखारी-६४१२)

२३. अल्लाह को सबसे ज्यादा महबूब कर्म (प्रिय अमल) वह है जो पाबन्दी से किया जाये चाहे वह थोड़ा ही हो। (सहीह मुस्लिम ७८३)

२४. जिसने किसी भलाई की तरफ किसी को मार्गदर्शन किया तो उसे भी उस शख्स की तरह सवाब मिलेगा जो भलाई का काम करने वाले को मिलेगा। (सहीह मुस्लिम-१८६३)

२५. जो किसी परेशान हाल पर आसानी (मदद) करेगा अल्लाह तआला उस पर दुनिया और आखिरत में आसानी करेगा। (सहीह मुस्लिम २६९९)

२६. जिसने किसी की बालिश्त भर जमीन पर नाहक कबजा किया (क्यामत के दिन) सात जमीनों का तौक (हार) उसकी गर्दन में पहनाया जायेगा। (सहीह़ बुखारी-किताबुल मजालिम)

२७. तमाम इन्सान ख़ताकार हैं लेकिन सब से बेहतर खताकार (गलती करने वाले) वह हैं जो अल्लाह की बारगाह में झुक कर तौबा कर लेते हैं। (जामेअ तिर्मिज़ी २४९९)

जमाअती खबर

मेरठ में समाज सुधारक प्रोग्राम

२४ अक्टूबर २०१८ बुधवार को इशा की नमाज़ के बाद अछल पुर मेरठ में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कोषाध्यक्ष श्री वकील परवेज़ की अध्यक्षता में समाज सुधारक प्रोग्राम का आयोजन हुआ जिस में विशेष अतिथि की हैसियत से मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने शिर्कत और खिताब किया। इस प्रोग्राम में हर मसलक के लोगों ने शिर्कत की। इस समाज सुधारक समारोह में भाग लेने वालों में मौलाना अब्दुल कुददूस उमरी, मौलाना मुहम्मद अज़हर मदनी, डारेक्टर इकरा गर्ल्स इन्टरनेशनल स्कूल, महताब कुरैशी, सलमान वकील आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं। मेरठ जिलई जमीअत के सचिव मौलाना राशिद असरी ने प्रोग्राम का संचालन किया। (जरीदा तर्जुमान १६-३० नवम्बर २०१८)

मधुमेह का एलाज

❑ **डा० एम. एन. बेग**

मधुमेह (डायबिटीज) मर्ज का स्थाई एलाज संभव नहीं है।

शूगर को कंट्रोल करने वाले इंजेक्शन या गोलियाँ जीवन भर लेनी पड़ती हैं। मोटापा, शूगर का ज़्यादा इस्तेमाल, उलझन इस मर्ज के कारण हैं।

प्राचीन चिकत्सीय किताबों में इस मर्ज का उल्लेख है जिससे पता चलता है कि यह पुराना मर्ज है। यह मर्ज किसी भी उम्र में हो सकता है लेकिन आम तौर से यह चालीस साल के बाद ही होता है। अगर जवानी में हो जाये तो घातक साबित होता है। इस के मरीज ८० प्रतिशत मोटे होते हैं।

अगर भूख ज्यादा लगे, शरीर दुबला होने लगे, कमजोरी महसूस हो, प्यास ज्यादा लगने लगे, पेशाब बार बार आये तो मधुमेह की ज्यादा संभावना है। तुरन्त डाक्टर से मश्वरा और संपर्क की जिये और इस मर्ज को मामूली और साधारण न समझीये।

शूगर का मरीज शकर और दूसरी मीठी चीज़ों से परहेज करे आलू चावल न खाये, पेशाब और खून की जांच कराते रहें या खुद करते रहें। विभिन्न कंपनियां ऐसे किट तैयार करती हैं जिससे मरीज अपने शूगर की जांच स्वयं कर सकता है।

अगर आप इस मर्ज से ग्रस्त हों तो निम्न बातें एक मोटे कागज़ पर लिख कर पलासटिक की मजबूत थैली में रख कर सील कर दें और इस को हमेशा जेब में रखा करें यह अचानक घटना के अवसर पर आप के लिये अत्यंत लाभकारी होगा। अंग्रेजी में अपना नाम, पता, और अपने मर्ज डायबिटीज का नाम लिख लें।

कभी कभी दवाओं के इस्तेमाल से ऐसे मरीज़ों के खून में अचानक शकर की मात्रा कम हो जाती है इसलिये एक छोटी सी प्लासटिक की थैली में भुने हये चने, छिले हुये पिसे हुये चने हमेशा जेब में रखिए, अगर अचानक पसीना आये, घबराहट हो, सामने धुंधलाहट हो, बेचैनी हो तो गुलूकोज को तुरन्त पानी में घोल कर पी लें और पिसे हुये चने खा लें। शकर की मात्रा तुरन्त उचित हद तक बढ़ जायेगी, और यह घातक लक्षण दूर हो जायेंगे। कम से कम ५० ग्राम गुलूकोज़ पी लेना चाहिये।

❑ ❑ ❑

इमामों उलमा और प्रचारकों का इलमी कनवेन्शन

प्रादेशकि जमीअत अहले हदीस आंध्रा प्रदेश की तरफ से २७-२८ अक्टूबर को विजय वाड़ा में दस सत्रों पर आधारित ओलमा, इमामों और प्रचारकों का इल्मी कनवेन्शन डा० सईद अहमद उमरी मदनी की अध्यक्षता में हुआ इस कनवेन्शन में मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अीमर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी और मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली ने मेहमाने खुसूसी की हैसियत से शिर्कत की और विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की और खिताब किया। (जरीदा तर्जुमान १-१५ दिसम्बर २०१८)

ग़रीब कौन है?

❑ अब्दुल बारी कलीम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से पूछा क्या तुम जानते हो कि मुफ्लिस (गरीब) किस को कहते हैं? सहाबा किराम ने जवाब दिया हम तो गरीब उसको समझते है जिसके पास रूपया पैसा और दौलत न हो। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया गरीब वह है जो क्यामत के दिन नमाज रोजा जकात का आमाल लेकर आयेगा और साथ ही साथ किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूठा आरोप लगाया होग, किसी का माल लूटा होगा कसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा हो गा, इन सबको उसकी नेकियों में से बदला दिया जायेगा, अगर नेकियाँ कम पड़ जायें गी तो उन लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे और उसे जहन्नम में डाल दिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक शख्स को क्यामत के दिन उसका कर्मपत्र दिया जायेगा तो उसको देखते ही कहेगा ऐ मेरे रब मेरी फलां फलां नेकियां जो मैंने की थी कहां गयीं, यह तो मेरा नामए आमाल (कर्मपत्र) नहीं है तो अल्लाह तआला फरमायेगा लोगों की गीबत करने की वजह से मिटा दी गयीं हैं। (इस को इमाम अस्फहानी ने रिवायत किया है)

कहते हैं कि दुनिया उम्मीदों पर काइम है, मजबूर, बेबस लोग उम्मीद के सहारे जी रहे हैं जब तक सांस तब तक आस, मगर आखिरत उम्मीदों सहारों और तमन्नाओं का घर नहीं हो गा बल्कि वहां पर जो कुछ मिलने वाला होगा वह हकीकी यकीनी बिल्कुल स्पष्ट और खुल्लम खुल्ला सामने रख दिया जायेगा, फिर उम्मीदों की कोई किरण बाकी नहीं रहेगी जिस को जो मिलना होगा वह मिल चुका होगा, बागे जन्नत और आराम गाह मिलनी होगी वह मिल जायेगी दोज़ख़ की आग या निरन्तर आजमाइश की सजा मिलनी हो गी तो इसका फैसला कर दिया जायेगा, फिर कोई कोशिश काम में नहीं आयेगी। कहने का मतलब यह है कि दुनिया का फकीर (मोहताज) भविष्य में मालदार भी बन सकता है, मगर आखिरत के दिन का फकीर दीवालिया, मोहताज दूसरों की नेकियों से कुछ हासिल नहीं कर पाये गा और न खुद अपनी परेशानी मोहताजी को दूर कर सकेगा। केवल इस दुनिया का जमा किया हुआ माल (सत्कर्म) ही उसके काम आ सकेगा शर्त यह है कि उसने दुनिया में दूसरों के माल व दौलत और सम्मान से खेलवाड़ न किया हो।

इस लिये अपनी जुबान व हाथ को कंट्रोल में रखो, दूसरों का सम्मान करो, और दूसरों के माल व दौलत को हथियाने से बचो और उस दिन की चिंता करो जब दूसरों से असत्य तरीके से ली गयी चीज़ें उन्हें वापस करनी पड़ेगी और न होने पर तुम्हारी नेकियां उनके हवाले और उनकी बुराइयां तुम्हारे खाते में डाल दी जायेंगी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्यामत के दिन की पकड़ से बचने का रास्ता भी बताया है।

क्या आख़िरत और फैसले के दिन पर यकीन रखने वाले, ईमान लाने वाले हक़ीक़त में इस पर अ़मल करके विश्वास का सुबूत दे सकते हैं? क्या उस दिन के भय से अपने हाथ जुबान को रोकने के लिये तैयार हैं? क्या वह उस दिन की मोहताजी से भयभीत हैं, क्या उन्हें अपने जुल्म का हिसाब देने का भय भी है?

❑ ❑ ❑

दहेज़ समाज में एक नासूर

❑ **शेर मुहम्मद असरी**

इस्लाम एक सादा, आसान, प्राकृतिक और मुकम्मल धर्म है जिसने सभी तरह के प्रोग्राम को आसान और सादा तरीके से करने का हुक्म दिया है मगर अफसोस कि हम ने इस्लाम के आदेशों को छोड़ कर के उसकी साफ सुधरी क्षवि को दागदार कर दिया है। शादी विवाह में उसके सादा और आसान तरीके को नजर अन्दाज (उपेक्षा) करके दहेज, बारात, मंगनी जैसी बुरी रस्मों को अपने अन्दर न केवल प्रचलित किया बल्कि समाज में इस को इतना ज्यादा बढ़ावा दे दिया कि इसके नुकसानात से हर शख्स परेशान है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया सबसे अच्छी शादी वह है जिसमें खर्च कम हो। (मिश्कात भाग-२, किताबुन निकाह) लेकिन जमाने की उल्टी तरक्की ने विवाह को मुश्किल से मुश्किल तरीन बना दिया है और दहेज शादी का एक अटूट हिस्सा बन गया है जब कि शादी का दहेज से कोई संबन्ध नहीं है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री हज़रत फातिमा की शादी में एक तकिया एक चादर और एक मश्कीज़ा दिया था वह इस लिये दिया था कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दामाद हज़रत अली रजिअल्लाहो तआला अन्हो के अभिभावक (सरपरस्त) थे केवल उन की ज़रूरत पूरी करने के लिये वह सामान दिया था।

अगर दहेज इस्लाम में जायज़ होता हो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दूसरी लड़कियों को भी दहेज देते और सहाबा किराम को भी इस की प्रेरणा देते लेकिन पूरे इस्लामी कानून में दहेज देने और लेने का कोई सुबूत नहीं। दहेज़ समाज के लिये एक नासूर है जिस के बुरे प्रभाव से असंख्य खानदान प्रभावित हुये हैं। किसी भी समाज में बिगाड़ खुद इन्सान का अपना लाया हुआ होता है जब समाज के लोग स्वार्थी, दुनिया परस्त, लालची और बेज़मीर हो जाते हैं तो इस प्रकार की बुराइयां प्रचलित हो जाती हैं और बढ़ने लगती हैं।

दहेज के नाम पर लड़के वालों की तरफ से अपमानित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी जाती है। शादी एक व्यवपार बन चुकी है।

लड़की की तरफ से अगर मैंके से ज्यादा दहेज लेकर न आये तो उस के ससुराल वालों की तरफ से पूरी जिन्दगी ताने सुनने पड़ते हैं जिसकी वजह से उसकी और उसके मां बाप की जिन्दगी अजीरन हो जाती है।

दहेज जैसी आज़माइश और घातक रोग में हर वर्ग ग्रस्त है और आज का समाज बिलबिलाता हुआ जख्मों से चूर और गमों से निढ़ाल दहेज की दवा ढूढ़ने में परेशान है अगर दहेज जैसे नासूर को समाज से निकाल बाहर नहीं किया गया तो इससे बुराइयां पैदा होंगी। आइये संकल्प करें कि शादियां सादा और इस्लामी तरीके पर करेंगे दहेज जैसी घातक रस्मों से बचें गे और दहेज को समाज से देश से खत्म करेंगे। अल्लाह हमें इस की क्षमता दे।